आजीवन सदस्यों की संख्या

	Sl. No.				Total
A	1	to	362	=	362
B	1	to	151	=	151
C	1	to	43	=	43
D	1	to	85	=	85
G	1	to	41	=	41
H	1	to	34	=	34
I	1	to	14	=	14
J	1	to	80	=	80
K	1	to	132	=	132
L	1	to	28	=	28
M	1	to	116	=	116
N	1	to	103	=	103

	Sl. No.				Total
O	1	to	13	=	13
P	1	to	160	=	160
R	1	to	393	=	393
S	1	to	423	=	423
T	1	to	12	=	12
U	1	to	48	=	48
V	1	to	100	=	100
W	1	to	1	=	1
Y	1	to	11	=	11
			Total	=	2350
Duplicate			03	=	03
आजीवन सदस्यता सं०				=	2353

इक्ष्वाकु कथन

Hope smiles from the thre shold of the session to come, whispering" It will be happier'.

(आसन्न सत्र की देहरी से आशा मुस्कुराती है, यह सुखकर होगा फुसफुसाती है)।

बहस:

संस्कृत का 'इक्षु' हिन्दी में 'ईख' है। जिस व्यक्ति ने ईख की खेती पहली बार की वह 'इक्ष्वाकु' कहलाए। उन्हीं के कुल में राम का जन्म हुआ (कादम्बिनी, दिसम्बर 2018 अंक पृष्ट सं०-82)।

श्री भगवान बोले- मैंने इस अविनाशी योग को सूर्य से कहा था; सूर्य ने अपने पुत्र वैवस्वत मनु से कहा और मनु ने अपने पुत्र राजा इक्ष्वाकु से कहा (गीता, चौथा अध्याय, श्लोक सं०-1 एक)।

कुश, भगवान राम के पुत्र थे। बचपन में कोई अपरिचित पुछता कि अपने के? बाबुजी 'कुशवंशी कहते थे। हम सभी भी अपने को कुशवंशी ही करते थे। हम उन्हीं के बंशज है। कुशबंशी होना शान की बात थी। हमारा मनोबल उँचा था।

तार जोड़ता हूँ तो वह कुश होते हुए राजा इक्ष्वाकु तक एवं वहाँ से सीधे सूर्य तक जाता है। सूर्यबंशी-कुशबंशी अब पिछड़ा। यह हीनभावना कब, कैसे, क्यों और किसने भर दी? बहस का मुद्दा है।

राम बिलास सिंह
अध्यक्ष
सासाराम+आरा क्षेत्र